(उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रायोजित)

द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय-संगोष्ठी

"पुराण वर्णित उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ- ऐतिहासिक परम्परा एवं संस्कृति"

22-23 फरवरी, 2020

पुराणेतिहास विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पञ्जीकरण-प्रपत्र

नाम .....

पदनाम .....

संस्था .....

पत्र व्यवहार का पता .....

.....

.....

दूरभाष सं. .....

ई-मेल .....

प्र. शुल्क (नकद) ₹ ..... दिनाङ्क .....

शोधपत्र का शीर्षक .....

.....

.....

.....

दिनाङ्क .....

स्थान .....

हस्ताक्षर

संरक्षक
प्रो. राजाराम शुक्ल
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी- 221 002

अध्यक्ष
प्रो. शशीरानी मिश्रा
विभागाध्यक्ष पुराणेतिहास विभाग
संकायाध्यक्ष
साहित्य संस्कृति संकाय
मो. 9415371669, 8299192742

आयोजन समिति

प्रो. गङ्गाधर पण्डा (पूर्व कुलपति)	मो. 9978585771
प्रो. आशुतोष मिश्र	मो. 9415375695
डॉ. विजय कुमार पाण्डेय	मो. 9452711081
डॉ. दिनेश कुमार गर्ग	मो. 9450229104
श्री लालजी मिश्र	मो. 8840622021
डॉ. विद्या कुमारी चन्द्रा	मो. 7985317844
डॉ. विशाखा शुक्ला	मो. 6392162466
डॉ. नीलम सिंह	मो. 9453037735

संयोजिका

प्रो. शशीरानी मिश्रा
विभागाध्यक्ष
पुराणेतिहास विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय-संगोष्ठी

"पुराण वर्णित उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ- ऐतिहासिक परम्परा एवं संस्कृति"

(उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रायोजित)

22-23 फरवरी, 2020

सेवा में,

_____

_____

_____

आयोजक
पुराणेतिहास विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-221002 (उ.प्र.)

पुराणों में वर्णित उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ ऐतिहासिक परम्परा और संस्कृति

सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित में पुराण के पञ्चलक्षण कहे गये हैं। पुराण के ये पाँच लक्षण महापुराणों में भी परिलक्षित होते हैं। श्रीमद्भागवत में तो दशलक्षण भी वर्णित हैं।

तीर्थों की गणना कहीं भी स्पष्ट रूप से प्राप्त नहीं होती है। यदि सूक्ष्मदृष्टि से विचार करते हैं तो सर्ग में इसका अन्तर्भाव परब्रह्म प्रकृति के पञ्चमहाभूतों में क्रमशः देवदानव, मानव, पशु-पक्षी, तिर्यगयोनि आदि में लक्षित होता है।

नदी, पर्वत, गुल्मलता आदि सभी पृथ्वी के ही अंग हैं। यथा-शरीर में मुख श्रेष्ठ है। वैसे ही तीर्थस्थान पृथ्वी का शरीर है।

सात मोक्ष दायिनी पुरियाँ भारत में सर्वजन में प्रसिद्ध हैं।

अयोध्या, मथुरा, काशी, काञ्ची, अवंन्तिका, द्वारिकापुरी (हरिद्वार) मायापुरी। ये सात मोक्षदायिनी पुरियाँ हैं। इसी प्रकार जलतीर्थों की प्रमुखता एक मांगलिक पद्य के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया गया है। गङ्गा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा कावेरी, सरयू, महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका शीप्रा वेलवती महासुरनदी ख्याता च या गण्डकी पूर्णा पूर्ण जल समुद्र सहिता कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।

भारत में उत्तर प्रदेश की अधिक महिमा व्याप्त है। जहाँ काशी, तीर्थराज प्रयाग, अयोध्या, मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, गोवर्धन, चित्रकूट आदि स्थल तीर्थ के साथ गंगा, यमुना, सरयू, गोमती, स्वरूप जलतीर्थ हैं। इनको छोड़कर अनेक तीर्थ है।

नैमिषारण्य, विन्ध्याचल, सम्भल, ब्रज, कालपी, श्रृंगवेरपुर आदि तीर्थ हैं। एक तीर्थ पर अनेक उपतीर्थ भी हैं। उदाहरणार्थ काशी में तीर्थ स्थल- केदारेश्वर, तिलभाण्डेश्वर, जैगीषव्येश्वर, द्वादशमाधव मन्दिर, अष्टगणपति, देवस्थान, जलतीर्थों मे गंगा, वरुणा आदि नदिया लोलार्क, पिशाचमोचन, कपालमोचन, ईश्वरगंगी आदि प्रसिद्ध कुण्ड दृष्टान्त योग्य हैं।

प्रसिद्ध तीर्थस्थानों का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक दृष्टि से समग्र अध्ययन इस शोध संगोष्ठी का उद्देश्य है।

प्रमुख स्थल तीर्थों, उनके उपतीर्थों व जलतीर्थों के ऊपर प्रकाश डालने वाली यह शोध संगोष्ठी राष्ट्रीय एकता को अग्रसारित करने वाली होगी, ऐसा दृढ़ विश्वास है।

विद्वान (विद्वत्जन) ये मनोकामना एवं प्रार्थना करते हैं कि उत्तर प्रदेश के तीर्थस्थानों का कोई भी पक्ष शोध की दृष्टि से अनुकरणीय है।

संगोष्ठी के विवारणीय शीर्षक

1. पुराणों में तीर्थराज प्रयाग का वर्णन।
2. काशी की पौराणिक एवं ऐतिहासिक परम्परा व संस्कृति।
3. पुराणों में मथुरा का वर्णन
4. अयोध्या की पौराणिक एवं ऐतिहासिक परम्परा व संस्कृति।
5. पुराणों में सीतामढ़ी का स्थान।
6. पुराणों में वृन्दावन ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में।
7. पुराणों में नैमिषारण्य का माहात्म्य।
8. पुराणों में भृगुतीर्थ का महत्व।
9. पुराणों में विन्ध्यधाम।
10. पुराणों में शुकताल तीर्थ।
11. पुराणों में चित्रकूट वर्णन।

शोध-पत्र आमन्त्रण

प्रतिभागीगण सम्बन्धित विषय पर शोध-पत्र संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में भेज सकते हैं। संस्कृत तथा हिन्दी में लिखे शोध-पत्र Kruti Dev 10 फॉण्ट साइज 14 तथा अंग्रेजी में लिखे शोध-Times New Roman पत्र फॉण्ट साइज 12 में एम.एस.वर्ड में टाईप कराकर सी.डी. सहित भेजें। शोध-पत्र साराश 300 शब्दों में अथवा पूर्ण शोध-पत्र कम से कम 3000 शब्दों में 30 जनवरी, 2020 तक अवश्य भेजें।

पञ्जीकरण शुल्क

शिक्षाविद् / सामाजिक कार्यकर्ता / अन्य	₹ 1000/-
शोधार्थी	₹ 600/-

पञ्जीकरण प्रपत्र इस निमन्त्रण-पत्र के साथ संलग्न है। स्थानीय प्रतिभागीगण से अनुरोध है कि पञ्जीकरण हेतु पूरित प्रपत्र के साथ पञ्जीकरण शुल्क स्वय पुराणेतिहास विभाग में नगद जमा करें। वाराणसी से बाहर के प्रतिभागीगण ई-मेल- shashiranimishra.sanyojak@gmail.com पर पञ्जीकरण की अग्रिम सूचना भेजने का कष्ट करें।

आयोजन स्थल

पुराणेतिहास विभाग
पाणिनी भवन सभागार
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-221002 (उ.प्र.)

नोट - इस प्रपत्र की फोटो कॉपी भी मान्य होगी। संयुक्त शोध-पत्र की स्थिति में अलग-अलग शुल्क देय होगा।